



Amire Ahle Sunnat Se Badshuguni Ke
Bare Me 20 Suwal Jawab (Hindi)

हफ्तावार रिसाला : 364
Weekly Booklet : 364

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के मल्फूज़ात का तहरीरी गुलदस्ता

अमीरे अहले सुन्नत से बद शुगूनी के बारे में 20 सुवाल जवाब

(सफ़हात : 16)



मुख़्तलिफ़ चीज़ों से बुरे शुगून लेना 2

क्या किसी के सितारे गर्दिश में आते हैं? 8

शीशा या कांच टूटने पर शुगून लेना कैसा? 10

सूरज ग्रहन या चांद ग्रहन का असर... 13

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये

ان شاء الله تعالى जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह पाक ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अक्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना
 व बक़ीअ व मरिफ़रत
 13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला “अमीरे अहले सुन्नत से बद शुगुनी के बारे में 20 सुवाल जवाब”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएँ तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट को (ब ज़रीअए WhatsApp, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दावते इस्लामी इन्डिया)

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अमीरे अहले सुन्नत से

बद शुगूनी के बारे में 20 सुवाल जवाब

दुआए ख़लीफ़ए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत से बद शुगूनी के बारे में 20 सुवाल जवाब” पढ़ या सुन ले उसे बद शुगूनी और तवहहुमात से महफूज़ फ़रमा और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा ।

أَمِينٌ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते शैख़ अबू बक्र शिबली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ एक रोज़ बग़दादे मुअल्ला के जय्यिद आलिम हज़रते अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पास तशरीफ़ लाए, उन्होंने ने फ़ौरन खड़े हो कर इन को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ता'ज़ीम के साथ अपने पास बिठाया । हाज़िरीन ने अर्ज़ किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़दाद आज तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ता'ज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلَّهِ ! आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अप्रोज़ मन्ज़र देखा कि हज़रते अबू बक्र शिबली (رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ) बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खड़े हो कर इन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पहलू में बिठा लिया । मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! शिबली पर इस

क़दर शफ़क़त की वजह ? अल्लाह पाक के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया कि यह हर नमाज़ के बा'द येह आयत पढ़ता है :

﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝﴾
 (القول البدیع، ص 346) और इस के बा'द मुझ पर दुरूद पढ़ता है। (التوبة: 128; پ 11)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

सुवाल : हमारे मुआशरे में तरह तरह के बुरे शुगून लिये जाते हैं मसलन सामने से काली बिल्ली गुज़र जाए तो यूं हो जाएगा, कच्चा बोले तो यूं होगा और तेल गिर जाए तो यूं होगा वगैरा वगैरा, येह इर्शाद फ़रमाइये कि इस बारे में इस्लाम हमारी क्या राहनुमाई करता है ?

जवाब : बद शुगूनी हराम है। (الطريقه المحمدية، 17/2) दुन्या में एक ग़ैर मुस्लिम क़ौम है जो काली बिल्ली से बद शुगूनी लेती है यहां तक कि अगर उस क़ौम के लोग कहीं सफ़र पर जा रहे हों और उन के आगे से काली बिल्ली गुज़र जाए तो वोह पलट कर आ जाएंगे और समझेंगे कि अगर अब सफ़र किया तो नुक़सान हो जाएगा लेकिन बद क़िस्मती से उस क़ौम के साथ रह रह कर बा'ज़ मुसलमानों ने भी काली बिल्ली से बद शुगूनी लेना शुरू कर दी है। अगर किसी नेक काम में कभी बद शुगूनी वाला कोई मुआमला हो जाए तो वोह काम ज़रूर कर गुज़रना चाहिये मसलन आप क़ाफ़िले में सफ़र कर रहे हैं और काली बिल्ली क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले हर फ़र्द के आगे से गुज़र जाए और एक बार नहीं बल्कि 100, 100 बार गुज़र जाए तब भी आप अपना सफ़र जारी रखें، إِنَّ شَاءَ اللهُ، ज़ियादा काम्याबी मिलेगी। तो इस तरह आप ने बद शुगूनी का रद करना है।

मैं एक बार कहीं जा रहा था और मेरे आगे से काली बिल्ली गुज़री मगर मैं ने अपना सफ़र जारी रखा और अल्लाह पाक की रहमत से आज

मैं आप के साथ बैठा हुआ हूँ तो काली बिल्ली से बद शुगूनी लेना हमारा नहीं गैर मुस्लिमों का अक्कीदा है और इस्लाम में बद शुगूनी लेना ना जाइज है ।
(मल्फूजाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/109)

सुवाल : 13 के अदद को मन्हूस समझ कर इस से बद शुगूनी लेना कैसा है ? नीज माहे सफ़र शरीफ़ को मन्हूस समझ कर इस में शादियां न करना कैसा है ?(1)

जवाब : आज कल लोग 13 के अदद को मन्हूस समझते हैं और इस से बद शुगूनी लेते हैं । 13 के अदद की भी क्या बात है कि प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ए'लाने नुबुव्वत के बा'द 13 साल तक मक्कए मुकर्रमा को अपने क़दम चूमने की सआदत अता फ़रमाई, इस के बा'द 10 साल तक मदीनए मुनव्वरह की हवाओं को जुल्फ़ें चूमने की सआदत बख़्शी, तो 13 का अदद बुरा नहीं है । (بخاری، 590/2، حدیث: 3902- مسلم، ص 984، حدیث: 6097 ماخوذاً) । इसी तरह बा'ज़ लोग माहे सफ़र को भी बुरा कहते हैं, न जाने उन्हें क्या हो गया है ? जब कि ख़ातूने जन्नत हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا और मौला मुश्किल कुशा हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की शादी माहे सफ़र में हुई थी । (الكامل في التاريخ، 2/12) और येह बेचारे माहे सफ़र में शादियां नहीं करते कि येह मन्हूस महीना है हालां कि मौला मुश्किल कुशा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ और बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا का निकाह खुद सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मौजूदगी में हुआ है लिहाज़ा माहे सफ़र में निकाह करना चाहिये बल्कि एहतिाम के साथ करना चाहिये ताकि लोगों की बद शुगूनियों का जोर टूटे ।

(मल्फूजाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/506)

①... येह सुवाल शो'बा मल्फूजाते अमीरे अहले सुन्नत का काइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَهُ का इनायत किया हुआ है ।

13 के अदद के बारे में लोगों के गलत खयालात

बहुत से लोग “13” नम्बर से भी बद शुगूनी लेते हैं और “13” नम्बर नहीं लिखते यहां तक कि कमरे और सीट पर भी “13” नम्बर नहीं लिखते, येह भी मा’लूमात की कमी की वजह से है वरना “13” नम्बर बुरा नहीं, बहुत अच्छा है और इसे कई निस्बतें हासिल हैं मसलन मौला मुश्किल कुशा हज़रते अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की विलादत की तारीख़ भी 13 रजबुल मुरज्जब है। (نور الابصار في مناقب آل بيت النبي المختار، ص 85) यूं ही जंगे बद्र में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ता’दाद 313 थी। (ترمذی، 3/220، حدیث: 1604) और अय्यामे तशरीक़ का आख़िरी दिन भी 13 जुल हिज्जतिल हराम है कि 9 जुल हिज्जतिल हराम की फ़ज़्र से ले कर 13 जुल हिज्जतिल हराम की अस् तक तकबीरे तशरीक़ पढ़ी जाती है। (در مختار، 3/71، 75، ملقط) 13 तारीख़ को अगर किसी के हां बेटा पैदा हो तो क्या उसे फेंक देंगे कि मन्हूस तारीख़ में पैदा हुवा है? हरगिज़ नहीं, बहर हाल 13 का अदद बहुत अच्छा है। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/110)

सुवाल : कुछ लोग इस तरह बद शुगूनी लेते हैं कि हमारे घर में फुलां चीज़ पकती है तो कोई बीमार हो जाता है या आफ़त आ जाती है, ऐसे लोगों को कैसे समझाया जाए ?

जवाब : इस्लाम में बद शुगूनी नहीं नेक शुगूनी है और बद शुगूनी ना जाइज़ और गुनाह का काम है। (الطريقية الحمديه، 2/17) हर कौम, हर बरादरी, हर गाउं, हर शहर और हर मुल्क में अलग अलग बद शुगूनियां पाई जाती हैं जो सब के सब ढकोस्ले (धोके) हैं और शर्अन उन की कोई अस्ल नहीं है। लोग

जैसी बद शुगूनी लेते हैं हकीकत में ऐसा होता नहीं है। सुवाल में खाने पीने के हवाले से बद शुगूनी का तज़्क़रा किया गया है वरना उमूमन फुलां दिन, फुलां तारीख़ और माहे सफ़र वगैरा बहुत से मुआमलात में बद शुगूनियां पाई जाती हैं जो कि ग़ैर मुस्लिमों से चली आ रही हैं।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/504)

सुवाल : हमारे घर की गेलेरी में रोज़ाना दो कव्वे लोहे के तार ले कर आते हैं और उस से कुछ बनाते हैं, अगर कोई उन को हटाने की कोशिश करे तो यह उस पर हम्ला कर देते हैं और ज़ोर ज़ोर से चीख़ने लगते हैं। पहले भी ऐसा हुवा था और मेरी वालिदा बीमार पड़ गई थीं और अब फिर इस तरह हुवा है और मेरे वालिद साहिब बीमार हो गए हैं, इस की क्या वजह है? लोग कहते हैं कव्वा शैतानी मख़्लूक़ है, इस को नहीं हटाना चाहिये। अब हम क्या करें? आप इस का कोई हल इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : कव्वा शैतानी मख़्लूक़ नहीं है। अलबत्ता इस को शर्ई इस्तिलाह में फ़ासिक़ कहा जाता है। (بخاری، 1/204، حدیث: 1829 ماخوذاً) बहर हाल **अल्लाह** पाक बेहतर जानता है कि आप के वालिदैन वाकेई उन कव्वों की वजह से बीमार हुए हैं या यह इत्तिफ़ाकी बीमारी है या फिर नफ़िसयाती असर की वजह से दिल पर यह बात ले ली कि अब यह कव्वे आ गए हैं, यकीनन किसी ने जादू करवाया होगा जिस की वजह से हम बीमार हो गए वगैरा। आप दा'वते इस्लामी की "मजलिसे रूहानी इलाज" के तहूत लगने वाले बस्ते से इस मस्अले के हल के लिये ता'वीज़ात लीजिये, घर में लटकाइये और अम्मी अब्बू बल्कि घर के सारे अफ़्राद पहन भी लें। **अल्लाह** पाक

इस मुसीबत से आप को नजात अता फ़रमाए।⁽¹⁾

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/435)

सुवाल : मुर्गा तो अज़ान देता है लेकिन मुर्गी अज़ान क्यों नहीं देती ?

जवाब : मुर्गा फ़िरिशतों को देख कर अज़ान देता है। (بخاری، 405/2، حدیث: 3303)

इस लिये जब मुर्गा अज़ान दे तो उस वक़्त अल्लाह पाक के फ़ज़लो रहमत की दुआ करनी चाहिये। हां ! मुर्गी अज़ान नहीं देती लेकिन अगर कभी कभार मुर्गी अज़ान दे दे तो लोगों को यह ग़लत फ़हमी हो जाती है कि “येह मुर्गी मन्हूस” है जिस की वजह से लोग उसे काट देते हैं। ऐसी सोच नहीं होनी चाहिये और न ही मुर्गी को मन्हूस कहना चाहिये, क्यों कि बद शुगूनी लेना गुनाह है, (तफ़सीरे नईमी, पारह : 9 अल आ’राफ़, तहत्तल आयह : 132, 9/119) मुर्गी तो अच्छी होती है। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/26)

सुवाल : अगर मुर्गी अज़ान देने लग जाए तो क्या उस के अन्डे और गोशत खा सकते हैं ?

जवाब : जो मुर्गी अज़ान देती हो तो उस के अन्डे और गोशत खाना बिल्कुल जाइज़ है। बा’ज़ लोग ऐसी मुर्गी को मन्हूस समझ कर ज़ब्द कर डालते हैं हालां कि येह बद शुगूनी है और बद शुगूनी लेना शरअन जाइज़ नहीं। अ़वाम में ऐसी और भी बहुत सी बातें मशहूर हैं मसलन माहे सफ़र या किसी खास तारीख़ को मन्हूस समझना, बिल्ली आड़े आने या आंख

① ... हज़रते इमाम मुहम्मद आफ़न्दी रूमी बिरकली رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ लिखते हैं : बद शुगूनी लेना हराम और नेक फ़ाल या अच्छा शुगून लेना मुस्तहब है। (الطريقية للمحمدية، 3/175-189) अगर किसी ने बद शुगूनी का ख़याल दिल में आते ही उसे झटक दिया तो उस पर कुछ इल्ज़ाम नहीं लेकिन अगर उस ने बद शुगूनी की तासीर का ए’तिकाद रखा और इसी ए’तिकाद की बिना पर उस काम से रुक गया तो गुनाहगार होगा मसलन किसी चीज़ को मन्हूस समझ कर सफ़र या कारोबार करने से येह सोच कर रुक गया कि अब मुझे नुक़सान ही होगा तो अब गुनहगार होगा। (बद शुगूनी, स. 13)

फड़कने को किसी मुसीबत का पैशख़ैमा (सबब) बताना वगैरा वगैरा यह तमाम बातें बद शुगूनी के क़बील (क़िस्म) से हैं जिन से बचना ज़रूरी है। इस क़िस्म के तवहहुमात और बातिल ख़यालात के मुतअल्लिक़ तफ़सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 127 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बद शुगूनी” का मुतालआ कीजिये।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/176)

सुवाल : सुना है कि सफ़र शरीफ़ का आख़िरी बुध मर्दों पर भारी रहता है। क्या यह बात दुरुस्त है ?

जवाब : نَعُوذُ بِاللّٰهِ ! अगर आप ने ऐसा सुना है तो ग़लत सुना है। सफ़र का पहला बुध न किसी पर भारी है और न ही आख़िरी बुध भारी है। सफ़र का कोई दिन, कोई घन्टा, बल्कि कोई लम्हा भी किसी पर भारी नहीं है। अलबत्ता वोह वक़्त इन्सान के हक़ में मन्हूस होता है जिस में वोह अल्लाह पाक की ना फ़रमानी करता है और वोह वक़्त बहुत खुश गवार होता है जिस में वोह नेकी बजा लाता या अल्लाह पाक की फ़रमां बरदारी करता है।⁽¹⁾

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/124)

सुवाल : मैं ने अपने उस्तादों से सुना है कि मंगल के दिन कैंची नहीं चलानी चाहिये, न ख़ाली न कपड़े पर कि इस से नुहूसत होती है, इस की क्या हक़ीक़त है ?

जवाब : मंगल के दिन कैंची चलाना या कपड़े काटना नुहूसत का बाइस नहीं।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/552)

① ... हज़रते अल्लामा इस्माईल हक़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : ज़माने के अज्ज़ा अपनी अस्ल हक़ीक़त में बराबर हैं और उन में कोई फ़र्क़ नहीं, अलबत्ता उन अज्ज़ा में जो नेकी या गुनाह वाक़ेअ़ हो उस में फ़र्क़ की वजह से ज़माने के अज्ज़ा में फ़र्क़ होता है, तो जुमुआ का दिन नेक काम करने वाले के ए'तिबार से सआदत मन्दी का दिन है औ गुनाह करने वाले के ए'तिबार से (उस के हक़ में) मन्हूस है। (تفسير روح البیان، پ 24، حم السجدة، تحت الآية: 16، 8/244)

सुवाल : अगर किसी के बने काम बिगड़ रहे हों तो लोग कहते हैं कि ओ भाई ! तेरे सितारे तो गर्दिश में हैं । क्या ऐसा कहना दुरुस्त है ? नीजु येह बता दीजिये कि क्या सितारे गर्दिश में आते हैं ?

जवाब : “सितारा गर्दिश में होना” एक मुहावरा है, वरना सितारे तो गर्दिश ही में रहते हैं, ठहरते नहीं हैं । यूं भी कहा जाता है कि आप पर गर्दिश है । बा’ज अवकात मुसीबतों और परेशानियों का एक दौर चलता है जिस में इन्सान येह कहने लगता है कि “यार पहले मिट्टी में हाथ डालता था तो सोना हो जाती थी, अब सोने में हाथ डालूं तो मिट्टी हो जाता है ।” ऐसी सूरते हाल में येह मुहावरा बोला जाता है । जब खुशहाली होती है तो अम तौर पर बन्दा गफलत का शिकार हो जाता है लेकिन जब मुसीबत का दौर आता है तो उसे अल्लाह याद आ जाता है, यूं मुसीबत बहुत से लोगों के हक में ने’मत साबित होती है और उन की जिन्दगी में Turning Point (इन्क़िलाबी मौक़अ) आ जाता है फिर वोह अल्लाह पाक की बारगाह में झुक जाते हैं कि मेरा रब मेरी मुसीबत दूर कर देगा ।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/253)

सुवाल : सितारों के अच्छे बुरे असरात पर यकीन रखना कैसा है ?

जवाब : नुजूम नज्म की जम्अ है और नुजूम से ही नुजूमि बना है जो सितारों की बातें बताता है । बेचारे कम इल्म लोग नुजूमियों के चक्करो में आ जाते हैं हालां कि उन के पास जाने की भी इजाज़त नहीं है ।⁽¹⁾ मुआशरे

① ... तारों से अवकात मा’लूम करना और रास्तों व सम्तों का पता लगाना जाइज है, रब तअाला फ़रमाता है : (16:14, 17:16) ﴿وَالنَّجْمُ هُمْ يَهْتَدُونَ﴾ (तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और सितारे से वोह राह पाते हैं ।) मगर इन में बारिश वगैरा की तासीरें मानना और इन से गैबी ख़बरें मा’लूम करना हराम है, लिहाज़ा इल्मे नुजूम बातिल है, इल्मे तौकीत हक़ ।

(मिरआतुल मनाजीह, 2/503)

में सितारों के तअल्लुक से भी बद शुगूनियों की भरमार होती होगी।⁽¹⁾

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/505)

सुवाल : क्या सितारों का किस्मत पर कोई असर होता है ?

जवाब : जी नहीं ! ऐसा सोचना भी नहीं चाहिये। (5819: حدیث: 944, مسلم)

येह जो Palmist (दस्त शनास) वगैरा होते हैं इन के धन्दे में कभी मत पड़ना !
पैसे भी जाएंगे और आप तवहहमात का शिकार भी हो जाएंगे। बस येह ज़ेहन
बना लें कि जो रब चाहेगा वोही होगा। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/254)

सुवाल : आंख फड़कने से अच्छा या बुरा शुगून लेना कैसा ?

जवाब : अच्छा शुगून लेना जाइज़ है जब कि किसी अच्छी चीज़ से बुरा
शुगून लेना जाइज़ नहीं। मसलन उल्टी आंख फड़कने से येह शुगून लिया
जाए कि कोई मुसीबत वगैरा आने वाली है येह ना जाइज़ है।

(बद शुगूनी, स. 120, मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/71)

① ... आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ
से सुवाल किया गया कि कवाकिबे फ़लकी (या'नी आस्मानी सितारों) के असराते सा'द व
नहूस (या'नी अच्छे और मन्हूस असरात) पर अक़ीदत (या'नी भरोसा) रखना कैसा है ? आप
رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने जवाब दिया : मुसल्मान मुत़ीअ (या'नी इताअत गुज़ार मुसल्मान) पर कोई चीज़
नहूस (या'नी मन्हूस) नहीं और काफ़िरों के लिये कुछ सा'द (या'नी अच्छा) नहीं और
मुसल्मान आसी (या'नी ना फ़रमानी करने वाले मुसल्मान) के लिये उस का इस्लाम सा'द
(या'नी नेक बख़्ती) है। त़ाअत (या'नी इबादत) बशर्ते क़बूल सा'द (या'नी नेक बख़्ती) है।
मा'सियत (या'नी गुनाहगारी) बजाए खुद नहूस (या'नी मन्हूस) है अगर रहमतो शफ़ाअत इस
की नुहूसत से बचा लें बल्कि नुहूसत को सआदत कर दें, ﴿قَالَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ سُبُوحًا قَدِيمًا﴾
(70: 19, الفرقان: 70) "तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों
से बदल देगा।" बल्कि कभी गुनाह यूँ सआदत हो जाता है कि बन्दा उस पर ख़ाइफ़ व
तरसां व ताइब व कोशां रहता है, वोह धुल गया और बहुत सी हसनात (या'नी नेकियां) मिल
गईं, बाकी कवाकिब में कोई सआदत व नुहूसत नहीं, अगर इन को खुद मुअस्सिर (या'नी
असर करने वाला) जाने शिक़ है और इन से मदद मांगे तो हराम है, वरना इन की रिआयत
ज़रूर ख़िलाफ़े तवक्कुल है।

(फ़तावा रज़िव्या, 21/223)

सुवाल : घर में शीशे की कोई चीज़ टूट जाए तो लोग बोलते हैं कि कोई अच्छी ख़बर आने वाली है या बा'ज कहते हैं कि कोई बड़ी आफ़त थी जो टल गई है, क्या इन बातों की कोई हकीकत है ?

जवाब : शीशे की कोई चीज़ टूटने के तअल्लुक से ऐसी बातें मेरी मा'लूमात में नहीं हैं। न ऐसी बातें कहीं पढ़ीं और न उलमाए किराम **كَرَّهُمُ اللهُ السَّلَام** से सुनी हैं। बस अ़वाम में बहुत सी बे बुन्याद बातें चल रही होती हैं, हो सकता है कि उन में से एक बात येह भी हो। अलबत्ता शीशे की कोई चीज़ टूटने पर ऐसा सोचने में हरज नहीं है कि “शायद कोई बड़ी आफ़त आने वाली थी जो छोटी बला पर टल गई है।” ऐसा सोचना **अल्लाह** पाक पर उम्मीद और हुस्ने ज़न रखना है जिस में कोई हरज नहीं। वैसे भी हर मुसीबत से बड़ी मुसीबत तो होती ही है।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/125)

सुवाल : क्या एक घर के चन्द अफ़राद की शादी एक साथ कर सकते हैं ? बा'ज लोग इसे नुक़सान का सबब समझते हैं, आप इस बारे में राहनुमाई फ़रमा दीजिये कि क्या ऐसा समझना दुरुस्त है ?

जवाब : एक वक़्त में भाई बहनों की इकठ्ठी शादियां करने में कोई नुहूसत या नुक़सान नहीं, चाहे तीन हों या तीन सो तेरह। इस्लाम में बद शुगूनी की कोई हैसियत नहीं है। येह सिर्फ़ लोगों के ख़यालात हैं कि तीन शादियां इकठ्ठी करना नुक़सान का सबब है हालां कि फ़ी ज़माना जिस अन्दाज़ से गाने बाजों के साथ और घर की ख़वातीन को नचा कर शादियां होती हैं इस तरह तो एक शादी में भी नुक़सान है फिर तीन शादियों में कितना नुक़सान होगा ? याद रखिये ! नुक़सान शादियों से नहीं, उन में होने वाले गुनाहों की वजह से

होता है। ज़ाहिर है जब गुनाहों भरी शादियां होंगी तो रहमते इलाही का नुज़ूल नहीं होगा बल्कि रहमत के दरवाज़े बन्द होंगे जो नुक़सान का सबब है।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/460)

सुवाल : क्या येह दुरुस्त है कि दुकान या कारोबारी जगह पर नाखुन काटने से नुहूसत होती है ? नीज़ क्या रात में नाखुन काट सकते हैं ?

जवाब : नाखुन काटना नुहूसत का काम नहीं बल्कि अदाए सुन्नत और हुक्मे शरीअत पर अमल की निय्यत से काटेंगे तो सवाब भी मिलेगा। अगर नाखुन काटने के सबब दुकान में नुहूसत आती होती तो फिर घर में भी न काटे जाएं कि वहां भी नुहूसत होगी। बहर हाल नाखुन काटना नुहूसत का सबब नहीं बल्कि 40 दिन के अन्दर नाखुन काटना सुन्नत है। अगर 40 दिन से ज़ियादा हो गए और अब तक नाखुन नहीं काटे तो बन्दा गुनाहगार होगा। नीज़ रात में भी नाखुन काटना जाइज़ है। अ़वाम में येह ग़लत मशहूर है कि रात में नाखुन काटना मन्अ है। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/342)

सुवाल : अगर किसी शख्स का येह ज़ेहन बना हुवा हो कि “अगर उसे पीछे से कोई आवाज़ देगा तो उस का फुलां काम बिगड़ जाएगा” ऐसा ज़ेहन रखना कैसा है ?

जवाब : ऐसी सोच रखना बद शुगूनी है, इस से तौबा करना ज़रूरी है।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/235)

सुवाल : मेरी बाईं आंख फड़क रही है, इस के लिये कोई दुआ वगैरा बता दीजिये जिस से मेरा येह मरज़ ख़त्म हो जाए।

जवाब : बा'ज लोग बाईं आंख फड़कने से बद शुगूनी लेते हैं, ऐसा कुछ भी नहीं है, इस तरफ़ तवज्जोह नहीं देंगे तो सुकून में रहेंगे। “आयतुल कुर्सी”

हर नमाज़ के बा'द एक बार पढ़िये और जब इस कलिमे पर पहुंचें (255:البقرة:255) (1) ﴿وَلَا يُؤْذَىٰ حِفْظُهُمَا﴾ तो दोनों हाथों की उंगलियां आंखों पर रख कर इस कलिमे को ग्यारह बार पढ़ें, फिर दोनों हाथों की उंगलियों पर दम कर के आंखों पर फेर लें। अगर आयतुल कुर्सी याद नहीं तो 11 मरतबा “يَا تُور” पढ़ कर हाथों की उंगलियों पर दम कर के फेर लें। इसी तरह आंखों के लिये यह वजीफ़ा भी मुफ़ीद है : (22:ق:26) ﴿كَلِمَاتٌ عَلِيمٌ﴾ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : “तो हम ने तुझ पर से पर्दा उठाया तो आज तेरी निगाह तेज़ है” यह पढ़ कर दोनों हाथों पर दम कर के आंखों पर फेर लें, अल्लाह पाक ने चाहा तो आंख फड़कना बन्द हो जाएगी। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/100)

सुवाल : बिल्लियां जब रोती हैं तो इस से क्या होता है ?

जवाब : बिल्लियों के रोने से बद शुगूनी नहीं लेनी चाहिये। बिल्लियों के रोने पर यह समझना कि बस कोई आफ़त आने वाली है लिहाज़ा फुलां सफ़र या फुलां सौदा केन्सल कर दो वरना नुक़सान हो जाएगा तो हकीक़त में ऐसा कुछ भी नहीं है। बिल्ली भी रोती है, बन्दा भी रोता है और बच्चे भी रोते हैं। इस से बद शुगूनी लेने के बजाए इब्रत हासिल करनी चाहिये जैसा कि एक किताब में लिखा है कि बच्चे जब रोएं तो जहन्नमियों का रोना याद करें। (253:م:218/3) (موسوعة ابن أبي الدنيا) बच्चा ऐसे लगता है कि बे बसी के साथ रो रहा है, तो जहन्नम में भी बे बसी के साथ रोना होगा। बस अल्लाह पाक ऐसा करम करे कि हम जहन्नम में ही न जाएं जो रोना पड़े। अल्लाह करे कि हम जहन्नम में जाने वाले काम करने के बजाए नेकियां ही करते रहें। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/137)

① ... तरजमए कन्ज़ुल ईमान : “और उसे भारी नहीं उन की निगहबानी।”

सुवाल : अच्छा शुगून लेने की कुछ मिसालें बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब : अच्छा शुगून लेना जाइज़ है । (तफ़सीरे नईमी, पारह : 9, अल आ'राफ़, तहूतल आयह : 132, 9/119) और लेना भी चाहिये, अहादीसे मुबारका में भी इस का तज़िक़रा है ।⁽¹⁾ जैसे सुब्ह सवेरे किसी अच्छे आदमी का फ़ोन आ गया तो इस से येह शुगून लिया जा सकता है कि “आज का दिन अच्छा गुज़रेगा ।” घर से बाहर निकले और किसी नेक आदमी से मुलाक़ात हो गई, इस से भी अच्छा शुगून लिया जा सकता है । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/87)

सुवाल : क्या हामिला औरत या उस की औलाद पर सूरज ग्रहन या चांद ग्रहन का कोई असर पड़ता है ?

जवाब : येह बात बहुत मशहूर है कि अगर औरत चांद ग्रहन में कैंची चलाएगी तो बच्चे के होंट कट जाएंगे या फुलां मुआमला हो जाएगा वगैरा । याद रखिये ! इस तरह के जो भी मुआमलात हैं, शरीअत उन की हौसला अफ़ज़ाई नहीं करती । अलबत्ता कभी ऐसा भी होता है कि किसी के हां इतिफ़ाक़ से कोई होंट कटा बच्चा पैदा हो जाता है तो कहते हैं कि इस की मां ने चांद ग्रहन में कैंची चलाई थी हालां कि इस की कोई शर्ई हक़ीक़त नहीं है ।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/40)

अमीरे अहले सुन्नत **وَأَمَّا بَرَكَاتُهُمُ الْعَارِيَةِ** से किये गए सुवालात और उन के जवाबात यहां ख़त्म हुए ।

① ... हज़रते बुरैदा **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** कबीलाए बन्ू सहम के 70 सुवारों के साथ हाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप **سَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम कौन हो ? उन्होंने ने कहा : बुरैदा । तब **رَسُولُ اللَّهِ** ने हज़रते अबू बक्र **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** की तरफ़ मुड़ कर फ़रमाया : **يَا أَبُوبَكْرٍ أَمْرُنَا وَصَلَاتُنَا**, हमारा मुआमला ठन्डा और अच्छा हो गया । फिर फ़रमाया : तुम किन लोगों से हो ? उन्होंने ने कहा : अस्लम से । आप **سَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते अबू बक्र **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** से फ़रमाया : **سَلِّمْنَا**, हम सलामती से रहेंगे । फिर फ़रमाया : तुम किस कबीले से हो ? उन्होंने ने कहा बन्ू सहम से । आप **سَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : **خَرَجَ سَهْمًا** (ऐ अबू बक्र) तुम्हारा हिस्सा निकल आया ।

(الاستيعاب في معرفة الصحابة، 1/263)

शुगून की किस्में

शुगून का मा'ना है फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अमल, आवाज़ या वक़्त को अपने हक़ में अच्छा या बुरा समझना। इस की बुन्यादी तौर पर दो किस्में हैं : ﴿1﴾ बुरा शुगून लेना ﴿2﴾ अच्छा शुगून लेना। अल्लामा मुहम्मद बिन अहमद अन्सारी कुरतुबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ "तफ़्सीरे कुरतुबी" में नक़ल करते हैं : अच्छा शुगून यह है कि जिस काम का इरादा किया हो उस के बारे में कोई कलाम सुन कर दलील पकड़ना, यह उस वक़्त है जब कलाम अच्छा हो, अगर बुरा हो तो बद शुगूनी है। शरीअत ने इस बात का हुक़्म दिया है कि इन्सान अच्छा शुगून ले कर खुश हो और अपना काम खुशी खुशी पायए तक्मील तक पहुंचाए और जब बुरा कलाम सुने तो उस की तरफ़ तवज्जोह न करे और न ही उस के सबब अपने काम से रुके।

(الجامع لاحكام القرآن للقرطبي، پ26، الاحقاف، تحت الآية: 4، ج8، 8، 16، ص132) **बद शुगूनी** हराम और नेक फ़ाल लेना मुस्तहब है। हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद आफ़न्दी रूमी बिरकली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ "अत्तरीकतुल मुहम्मदिय्यह" में लिखते हैं : बद शुगूनी लेना हराम और नेक फ़ाल या अच्छा शुगून लेना मुस्तहब है। (الطريقة المحمدية، 2/17، 24) और मशहूर मुफ़स्सिरे कुरआन हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ लिखते हैं : इस्लाम में नेक फ़ाल लेना जाइज़ है, बदफ़ाली, बद शुगूनी लेना हराम है। (तफ़्सीरे नईमी, 9/119)

अहम तरीन वज़ाहत : न चाहते हुए भी बा'ज अवकात इन्सान के दिल में बुरे शुगून का ख़याल आ ही जाता है, इस लिये किसी शख़्स के दिल में बद शुगूनी का ख़याल आते ही उसे गुनहगार करार नहीं दिया जाएगा क्यूं कि महूज़ दिल में बुरा ख़याल आ जाने की बिना पर सज़ा का हक़दार ठहराने

का मतलब किसी इन्सान पर उस की ताकत से जाइद बोझ डालना है और येह बात शर्ई तकाजे के ख़िलाफ़ है। (मल्फूजाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/40)

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
मुख़्तलिफ़ चीज़ों से बुरे शुगून लेना	2
13 के अ़दद को मन्हूस समझना कैसा ?	3
13 के अ़दद के बारे में लोगों के ग़लत ख़यालात	4
फुलां चीज़ पकती है तो कोई बीमार हो जाता है	4
मुर्गी अज़ान दे तो उसे मन्हूस समझना कैसा ?	6
क्या अज़ान देने वाली मुर्गी का गोश्त और अन्डा खा सकते हैं ?	6
सफ़र के आख़िरी बुध को मन्हूस समझना कैसा ?	7
क्या मंगल के दिन कैंची नहीं चलानी चाहिये ?	7
क्या किसी के सितारे गर्दिश में आते हैं ?	8
सितारों के असरात पर यक़ीन रखना कैसा ?	8
सितारों का किस्मत पर कोई असर	9
आंख फड़क्ने से शुगून लेना कैसा ?	9
शीशा या कांच टूटने पर शुगून लेना कैसा ?	10
घर के चन्द अपराद की शादी एक साथ करना	10
दुकान या कारोबारी जगह पर नाखुन काटना	11
पीछे से आवाज़ देने को बुरा समझना कैसा ?	11
आंख फड़क्ने पर येह दुआ पढ़ें	12
बिल्लियां जब रोती हैं तो....	12
अच्छा शुगून लेने की कुछ मिसालें	13
सूरज ग्रहन या चांद ग्रहन का असर...	13

हफ़्तावार रिसाला मुतालआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते

इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार
कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ / ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत
अलहाज अबू उसैद उबैद रज़ा मदनी رَضِيَ اللهُ عَنْهُمُ الْعَالِيَةِ की जानिब से हर
हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरगीब दी जाती है। ! مَا شَاءَ اللهُ الْكَرِيمُ !
लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या
सुन कर अमीरे अहले सुन्नत / ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत
की दुआओं से हिस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दावते
इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamiindia.org
से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से
खुद भी पढ़ें और अपने मर्हूमिन के ईसाले सवाब के लिये
तक्सीम करें। (शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुतालआ)